नरेन्द्र मोहन के नाटकों में नारी की नियति

सुनीता

पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.

प्रस्तावना :-

नारी की नियति इतनी तो नहीं कि वह जन्म से अभिशप्त, जीवन भर सदियों से पुरानी श्रृंखलाओं ओर रुढि बन्धनों को काट कर मुक्त मानव का जीवन जिए। युगेां से किये गये अमानवीय व्यवहार ने नारी को स्वयं भी अपनी दृष्टि में हीन बना दिया है। उसका मानसिक विकास जिन परिस्थितियों में हुआ उसमें उसने यह मान लिया कि उसके अपने कोई अधिकार नहीं है,न ही वह उच्च सम्मान की अधिकारिणी है। इस स्थिति को उसने प्रकृति प्रदत्त मानसिकता मानकर स्वीकार कर लिया और दासता का जीवन जीती रही।

नरेन्द्र मोहन के नाटकों में नारी चेतना,नारी मुक्ति,नारी दासता,नारियों के प्रति समाज,परिवार का दायितव आदि विषयों पर कम प्रकाश डाला है। लेकिन डाला भी है तो बहुत प्रभावपूर्ण।इन्होंने नारी को कहीं पत्नी के रुपमें ,कहीं माँ के रुप मं दिखाया है। नरेन्द्र मोहन का पहला नाटक' कहें कबीर ---------' में नारी को एक माँ-पत्नी,एक आध्यसत्मिकता से पूर्ण नारी के रुप में दिखाया है। इनके नाटक स्त्री के मानसिक तनावों और संतापों को एक साथ समेटे हुए है। समाज में स्त्री सम्बन्धी सोच और चिंतन को आज के प्रचलित सन्दर्भ में अपने नाटकों के माध्यम से लेखक ने प्रकाश डाला है। कबीर की माँ नीमा को हर समय कबीर की चिन्ता इसलिए रहती है। क्योंकि वह समाज के मजबूत वर्ग-चाहे वह जमींदार हो या पटवारी या उच्चजाति का ब्राम्हमण इन सबकी प्रताडना,शोषण की शिकार है वह नही चाहती कबीर समाज के उस मजबूत वर्ग से टकराये जो उसे हर समय क्षति पहुँचाना चाहता है वह नीरु से कहती है कि "सारी उम्र तुम्हे समझाती रही इन साधु सन्तों के फेर में न पडो पर तुमने एक न सुनी अब भुगतो,बेटा भी उसी राह पर है "$_{42}$ आगे कबीर से कहती है कि "मैने उसे कई बार समझाया दूसरों की बातों में टांग न अडाया कर, मजहबी तकरारों में मत पड।वे बडे लोग है ऊँचे लोग है। $_{43}$"

इस उध्दरण से पता चलता है कि निम्न जाति की नारियाँ हर दृष्टि से समाज,परिवार के व्दारा उपेक्षित,शोषित उत्पीडित थी। एक एकान्त लगातार हर स्त्री के अन्दर रहता है जिससे वे अपने को असहाय अपमानित,दीन समझती थी। इसी कारण नीमा अपने पुत्र को हर तरह से समाज के ठेकेदारों से बचाना चाहती है वह उनकी गन्दी कस्तूतों की शिकार है। मध्यकालीन नारी शिक्षा के अभाव में अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं थी। पुरुष प्रधान समाज में लेखक ने नारी को जहाँ ममता की मूर्ति के रुप में दिखाया है वही पत्नी के रुप में पारिवारिक उत्तर दायित्व को हर दृष्टी से निभाने के प्रति सजग दिखाया है।" कहें कबीर---------" में नीमा नीरु से कहती है कि "तुम बरजते क्यों नही? क्यों दखल देता है दूसरों के तौर तरीकों में, रहन-सहन में कर्मकांड में?"$_{44}$ वही नही चाहती उसका बेटा किसी बडी मुसीबत में फँसे इसलिए वह कबीर का विवाह करना चाहती है। वह इसलिए कबीर से शादी करने के लिए कहती है। "वह तेरा ध्यान रखेगी,तू उसका/घरवाली होगी तो तू घर को घर समझेगा।" इसी नाटक में नारी के दूसरा रुप शुरु में पत्नी,प्रेयसी के रुप में सामने आता है लोई कबीर को,अथाह प्रेम करती है। कबीर के जीने मरने का संबल बनती है। वह कबीर से कहती है कि "इन ऑखों में मुझे प्रेम के सैकडों रुप दिखते है और लगता है सभी मेरे अपने है। "$_{45}$ वह कबीर में एक अलौकिक सत्ता दर्शन करती है। किन्तु नीरु एक पारिवारिक महिला होने के नाते परिवार के बच्चों का मरण-पोषण करना उसका पत्नी होने के साथ मुख्य उत्तरदायित्व बनता है उस उत्तरदायित्व को पूर्णतया निभाती है। वह गरीबी की

मार सहन करते हुए अतिथि सत्कार के प्रति सचेत है ।सन्तों का अचानक आना,उनके खाने की व्यवस्था अपनी इज्जत को दाँव पर लगाकर करना,ये सब बातें नारी व्यक्तित्व को और उज्जवल बना देती है । वह कबीर से कहती है । "घर में फूटी कौडी नही,इनका सत्कार कैसे करें,बोलो "[46] वह अपने पति की बात को रखने के लिए साहूकार के बेटे को रात में आने का बचन देने के बारे में कबीर को बताती है । "साहूकार के लडके ने इस शर्त पर पैसे दिये थे कि रात को मैं उनसे मिलने के लिए आऊँ । मैंने उसकी शर्त मान ली और वचन दे दिया" [47] कबीर के यह पूछने पर कि तुम वहाँ कैसे जाओगी ? वह कहती है । "जिसका पति साथ हो, उसका भला कोई क्या बिगाड सकता है? बारिश की बूँदों की क्या मजाल ।"[48]

इन बातों से यह स्पष्ट होता है लेखक ने अपने नाटकों में विशेषत:

"कहे कबीर-------" में नारी को नीमा,नीरु के रुप मे एक पारिवारिक दायित्व से पूर्ण हर दृष्टि से अपने पति ओर बच्चों के प्रति समर्पित दिखाया है किन्तु यह समर्पण,विश्वास पति के अपर से तब उठता है जब पति अपना उत्तरदायित्व निभाने में असमर्थ रहता है । कबीर अपनी भक्ति,साधना में इतने तल्लीन थे उन्होंने परिवार की ***मूलभूत परिस्थितियों समस्याओं को अनदेखा कर दिया है जिसके*** _ कारण उनके बीबी-बच्चे भूख से बेहाल थे। यहीं पर नारी का पति प्रति के प्रेम,विश्वास डगमगा जाता है । नीरु का कबीर से यह कहना-"तुम्हें कवित्तों की पडी है बताओ,मैं इन बच्चों का क्या करुँ? क्या दूँ इन्हें खाने को? इनका गला घोट दूँ क्या/ धंधा करते खड्डी में मन लगाते तुम्हारी जान निकलती है, बोलो कहाँ से खिलाऊँ इन्हें।"[49] उसकी नारीगत विवशता है, लाचारी है ।

इसी तरह की विवशता,लाचारी,मजबुरी को नरेन्द्र मोहन ने अपने 'अभंगगाथा' नाटक में जिजाई के माध्यम से दिखाया है । वह तुकाराम की भक्तिभावना से परेशान होकर कहती है कि "पागल से लुटाते रहे अन्न अब रुकमा मर रही है भूख से बेहाल,बच्चा प्यास से निढाल" तुकाराम उसके समझाने पर भी नहीं मानते तो वह स्वयंही कुछ करने के लिए कदम बढाती है । यहाँ लेखक ने नारी को दृढ, मजबूत, उत्तरदायित्व से पूर्ण लोई की तरह जिजाई को परिवारिक नारी के रुप म पेश किया है उन्होने नारी के अन्दर छिपी प्रतिभा को निखारा है वह तुकाराम से कहती है "जो ठिक लगता है करती हूँ और हड्डियों में जान है करती रहूँगी "[5.] दूसरी और लेखक ने नारी के उस रुप को दिखाने की कोशिश की है जो पुरुष की प्रगति उन्नति के लिए प्रेरक बनती है उसकी प्रेरणाश्रोत बनती हे चाहे उसे कुछ भी बलिदान करना पडे । रुखमा के ये शब्द "रात काली गगरी जमुना की धारा भी काली है माय ----------"[51] तुकाराम की चेतना को जगाते है । दूसरी ओर जिजाई है । वह अर्थ संकट,पारिवारिक दायित्व और तुकाराम की उदासीनता, अभंगों में तल्लीनता से बराबर वह जूझ रही है । लेखक ने जहाँ जिजाई के व्यक्तित्व को कठोर क्रोधी दिखाया है । वही उसके अन्दर छिपी आन्तरिक कोमलता,प्रेम,करुणा,दया को भी उजागर किया है जिजाई के व्यक्तित्व में एक एसी स्त्री की यातना है जो निम्न मध्यवर्ग के गहराते अर्थ संकट ओर पारिवारिक दायित्वों से तो जूझती ही है वह अपने रचनाकार संतस्वभाव के पति के राम और विराग दो ध्रुवों पर खडी है । स्वंयं को अकेला पाती है। यह अकेलापन तुकाराम की दूसरी पत्नी रुखमा की उपस्थिति के कारण और गहरा हो जाता है । एक तरह की भावनात्मक असुरक्षा जिजाई के अन्दर लेखक ने दिखायी है जिसके परिणाम स्वरुप उसका व्यवहार कटु से कटुत्तर होता चला जाता है । बढता हुआ अर्थ संकट और बेकारी जिजाई को हर तरफ से लाचार बना देती है । उसका ये कथन तो बता किसके विरोध हे ? भूख से विलखते बच्चे जब मुझे नोंच-नोंच कर खाते है"तो दिल में आता है इनके गले घोंट दूँ ।"[52] इस दुर्गाति से घिरी जिजाई को पति तुकाराम का सद्गति के लिए भंडारा पहाडी पर जा बिराजना कतई नहीं भाता । उसकी कटूक्तियां तुकाराम पर तीखे प्रहार करती है । वह तुकाराम की पहली पत्नी रुखमा से सख्त नाराज है । वहीं रुखमा तुका की भाव दशा को समझती है ओर उसके अमंगों के प्रति दीवानी है ये तमाम चीजें जिजाई को खींज से भर देती है ।

नरेन्द्र मोहन न 'अमंगगाथा' में जिजाई का व्यक्तित्व बेहद शार्प होकर निकाला है। उसकी कडुवाहट कभी-कभी 'आधे अधूरे' की सावित्री की याद दिलाती है इस नाटक में मंगला प्रसंग षडयन्त्रों को दिखाने और उसके माध्यम से राजनैतिक दुष्चक्रो का खुलासा करने के लिए उपस्थिति हुआ है इसके चौथे अंक में तुकाराम ओर मंगला का पूर्ण आध्यात्मिक ओर लोक चेतना के भाव से किया गया नृत्य उनकों लोक चेतना से जोडता है। एसा ही प्रसंग लेखक ने "कहै कबीर-------" में संत कबीर और रमजनिया का दिखाया है यहाँ रमजनिया कबीर का साथ पाकर एक नर्तकी से ऊपर उठकर आत्यात्मिकता से पूर्ण उच्च व्यक्तित्व वाली नारी बन जाती है। लेखक ने यहाँ यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि महिलायें क्यों पतित होकर वैश्यायें बनने पर मजबूर होती है नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटकों के माध्यम से इनकी दुर्गति के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज की व्यवस्था,वातावरण,पुरुष प्रधान समाज का वर्चस्व ये सब ऐसे कारण है जिससे ये पतन के रास्ते पर चलती है। 'अभंगगाथा' और "कहैं कबीर --------" में इन दो महान सन्तों का साथ पाकर के दो नर्तकी सामान्य जीवन से उठकर एक आध्यात्मिक नारी बनती है।

"अभंगगाथा" में मंगला तुकाराम पर अपने रुप का जादू चलाना चाहती है। किन्तु स्वयं आध्यत्मिक और भक्ति की धारा। में बँधकर रह जाती है भौतिक सुख साधनों को ही जीवन का परम लक्ष्य मानने वाली सौन्दर्य की व्यपारिणी मंगला "सुन्दर श्री रुप खडा ईट पर कर कटि तट पर "[53] की पंक्तियॉं सुनाकर झूम उठती है। लोगों को उपालम्भ का उत्तर देते हुए कह उठती है "आज मैने संगीत का,स्वरों के उतार-चढाव का वह जादू देख लिया जो आत्मा की अनुगूंज है।"[54]

कहने का तात्पर्य है कि नारी जहाँ दया,ममता,करुणा, प्रेम,त्याग की मूर्ति होती है वहीं वह विलासता,भोग्य की वस्तु परिस्थिति यश बनकर रह जाती है हर क्षेत्र में नारी पुरुष का प्रेरणाश्रोत,सम्बल बनती है। रुखमा की रुह तुका के अभंगो में बसती है। उसके बिना वह अस्तित्वहीन है। मरजाने के बाद भी वह तुकाराम की सम्बल बनती है। "मैं न रहूँ तो उदास न होना,दु:खी न होना,कोई भी न रहे तो अभंगों में लौट आना। इनमें तुम हो,इसकी पूरी सादगी में मै"[55] रुकमा की तरह भागीरथी भी तुकाराम को समझाती है। प्रेरित करती है अभंगों का आनन्द लेने की किन्तु जिजाई को परिवार चलाना है वह बीवी और उभंगों में नहीं रह सकती क्योंकि यह उसकी विवशता है मजबुरी है उसे परिवार चलाना है। वह भागीरथी से कहती है-"भूल गयी तू छोटी-छोटी चीज के लिए मेरा तरसना, लडना, एकाएक करके मेरी चीजें इकट्ठा करना ओर तेरे बापू का हर चीज को, घर में आ रहे अनाज को लोगों के बीच लुटा देना,चढा विट्टल महाराज को।"[56]

कबीर यदि इनको कपडे का थान दे आते है। वहीं तुकाराम भूख से व्याकुल को धर में पडा अनाज। नीमा,लोई,जिजाई ,सन्तों,एक पारिवारिक उत्तरदायित्व को निभाने वाली महिलायें है। उन्हें ये भक्ति का मार्ग जिससे घर बरबाद होता है। कतई पसन्द नहीं आता। नरेन्द्र मोहन नारी ने दो रुपों का वर्णन किया है एक रुप में नारी जिजाई के रुप में तुकाराम के लिए सृजन हेतु वेदना का कारण है। वही रुखमा काव्य प्रेरणा का इसीलिए वह जिजाई से उपेक्षित ,तिरस्कृत होकर भी वह आत्मविश्लेषण करता हुआ पुन: लौटता है।

उत्तर आधुनिकता के युग में नाटककारों ने स्त्री पुरुष सम्बन्धों को इस ऊँचाई के साथ प्रस्तुत किया है कि वह समाज में एक उच्च स्थान व पुरुष की भागीदारी हर क्षेत्र में दे रही है। लेखक ने जिजाई के अन्दर अभंगों और तुका के प्रति एक खीझ जरुर है लेकिन तिरस्कार नहीं,वह माँ होने के कारण यह बर्दाश्त नहीं कर पाती कि उसके बच्चे अन्न के दाने-दाने के लिए मोहताज हों। और एसी परिस्थिति में तुकाराम अनाज के बोरे लुटाता रहे घर में फूटी कौंडी न हो,वह खोया रहे अमंगों में ,वीणा में। किन्तु साथ-ही साथ उसकी पत्नी के रुप में वह अपने पति के यश,उसकी रचना सामर्थ्य से अभिभूत है। इसीलिए भंबाजी को लताडती है। कान्हाजी को आडे हाथों लेती है। अपनी व्यवहार से वह निरक्षर लग सकती है किन्तु उसमें आधुनिक अर्थो में नारी अधिकारों के प्रति सजगता भी है। इसीलिए स्वयं को पति की 'बाँदी 'या फालतु गले पडी नहीं स्वीकारती। वही हमेशा

तुका से कहती है कि "तुम्हारे चाहने न चाहने से बँधी तुम्हारी बाँदी नहीं हूँ। गले पडी हुई नहीं हूँ कि फालतू मान लो।मेरा कसूर बताओ "[58]

विशेषतः जिजाई का व्यक्तित्व ऊपरी तौर पर चख-चख करने वाली औरत का है जबकि भीतर से वह तुकाराम की रग-रग से परिचित है। इस बात को लेखक ने बडी कुशलता से उकेरा है। "नो मैंस लैण्ड" में नरेन्द्र मोहन ने नारी को शोषक,उत्पीडन,बलात्कार,असहाय व आततताइयों की शिकार के रुप में दिखया है इसमें सत्ता,समाज के दरिन्दों,ठेकेदारों की हवश,शोषक की शिकार बनी है। यही हालत "सींगधारी" नाटक में नारी की है। सकील उसकी माँ,वकील की महबूबा,"सींगधारी "की शालू इन सबके उदाहरण है। लेखक ने रुपा के माध्यम से नारी की दर्द भरी दास्तान को इस वाक्य से स्पष्ट किया है। "माँ नहीं रही उन लोगों के व्दारा जला दी गयी जिनके लिए आप लडते रहे ---------। मेरे चारों तरफ दीवारें ही दीवारे है। घर नहीं ------ घर दो ! दार जी।"[58] दूसरे स्थान पर परमिन्दर का यह कहना - "आजादी की लडाई पता नहीं तुम क्या कहते रहते हो। तुम्हारी बातें सपनों सी लगती है।"[59]

"नौ मैंस लैण्ड" की परमिन्दर "कहै कबीर की नीमा ये दोनों ही महिला पात्र समाज के आततताइयों की शिकार है इनका मनोबल गिरा हुआ है। वर्तमान दौर में आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, रुढिवादिता, पिछडापन, अशिशा और पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता ने नारी की मानसिक स्थिति को लाचार बना दिया है।यह लाचारी,कमजोरी आज से नहीं सदियों से चली आ रही दासता का फल है। जिसने लेखक ने अपने नाटकों के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है। नरेन्द मोहन इन्हें समाज का सबसे कमजोर वर्ग मानते है। क्योंकि सुरजीत "सींगधारी" में कहती है "इतने दिन कहाँ रहे तुम? मैं तडफती रही तुम्हें देखने को,एकदम क्षुब्ध होकर। मेरी बेटी कहाँ गयी ,मेरी बेटा कहाँ गया पवन"[6]. ये नाटक समाज व्दारा शोषित, पीडीत, साम्प्रदायिकता की आग में जुलसी हुई नारी की व्यथा है जिसने अपना परिवार खो दिया।

"नौ मैंस लैण्ड" और "सींगधारी" नाटक में स्त्रियों का यौन उत्पीडन है चारों तरफ उनके साथ पशुता का नंगा नाच है। वर्तमान में जो बलात्कार,उत्पीडन की घटनायें घटित हो रही है उनका लेखा-जोखा नरेन्द्र मोहन के नाटकों में मिलता है। आये दिन एसी ही घटनायें धटित होती है।"सींगधारी" में शालू इन्हीं घटनाओं की शिकार है उसके कथन में उसकी बरबादी साफ झलकती है-"इन्हें मेरे जख्मी होने पर भी शक है। ओफ! कैसी डराबनी थी वही रात न जाने मेरी माँ,बापू और भाई कहाँ होंगे किस हालात में ------- मेरे जीतू चाचा को दरिन्दों ने कितनी बेदर्दी से मारा - पीटा है - गोलियाँ चलाई -------- माँ, बापू और भाई ---------- ।"[61] आगे वह कहती है "उन लोगों ने बापू और भाई को बुरी तरह पीटा,माँ पर वार किया --------- माँ की चीखें सुनकर मैं दौडती बाहर आयी एक ने मुझे अपनी बाहों में ऊपर उठा लिया ------- तभी जीतू चाचा पहुँचे घर। उन्हें भी बुरी तरह पीठा गया।"[62]

यदि ये लोग अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों शोषण,उत्पीडन की दास्तान के विरुध्द आवाज उठाती है। तो इनकी आवाज को दबा दिया जाता है न्याय के स्थान पर समाज के व्दारा अपमानित होना पडता है। सिराजुदीन और सकीना प्रसंग में दफेदार दो का यह कथन "सकीना के जिस्म में जुंबिस हुई। उसने बेजान हाथों से इजारबन्द खोल सलवार नीचे सरका दी "।[63] इतियअथार्थ के स्तर पर नारी के मानवीय मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। हीरा "डरावने सपनों की तरह खूबसूरत औरत को चूमकर उसे खेतों मे उठा ले जाता है ,उसे सीधा लिटाकर उस पर 'कुत्ते की तरह चढ जाता है। पलट कर देखता है, यह तो लाश है।" यहाँ लेखक ने नारी को भोग्य और बेजान वस्तु मानकर उस पर क्रूर अमानवीयता,पाशुविकता का व्यवहार,उसकी लाचारी,बेबसी,को बडी सादगी और संजीदगी से पेश किया हे। आज का युग हेा या मध्यकाल का ------ नारी वातावरण के झोंके से प्रकम्पित हो एक 'कन्दुक' बन गयी है। हाथ से पकड फेंका,पैर से मारा,पुनः घर में बन्द कर दिया। नरेन्द्र

मोहन ने स्पष्ट किया है । इस विषय में कि नारी उस स्थिति में एकदम निरीह और बेचारी बन जाती है जब वह बलात्कार,अपहरण,उत्पीडन की शिकार होती है । मद्यप,जुआरी पति की ताडगा के विरोध में पत्नी आज भी प्रत्येक 'करबाचौथ' केा जन्म जन्मान्तर में उसे पाने के लिए व्रत करती है । "सींगधारी" की सन्तों अपने पति से सिर्फ यह कह पाती है कि "आ गये,बचे हुए रुपये भी हार गये होंगे । अब मैं बच्चों को क्या खिलाऊँ,अपना सर ।"[64] संस्कारों की जंग लगी परते किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने से उसे बर्जित करती रहती है ।वह चुन है ।

नरेन्द्र मोहन का छठा नाटक "मिस्टर जिन्ना "है । इनमें भी नारी को भोग्य वस्तु मानने का विरोध है ।कहते है कि शिक्षा का मनुष्य पर अच्छा प्रभाव पडता है किन्तु यहाँ जिन्ना उच्चशिक्षा को प्राप्त किये हुए है फिर भी रुढिवादी विचारों से ग्रसित है नारी के सन्दर्भ में । उन्होंने पारसी लडकी से स्वयं विवाह किया,चाहा किन्तु रखा उसे अपनी पुरानी परम्परा के अनुसार उनकी पुत्री दीना जब पारसी लडके से विवाह करती है । तो जिन्ना को यह बात असहनीय लगती है । उसे अपने से दूर कर देते है । सत्ती के एक पढी लिखी युवती होने के बाबजूद भी जिन्ना से प्रताडित है । दु:खी है । दीना में विरोध का स्वर मुखर हे वह अपने हिसाब से जीना चाहती है और सफल भी हुई है । उसमें आज की पीढी का स्वर मुखर है ।यह अपनी माँ के लिए दु:खी है ।फातिमा का चरित्र यहाँ स्वार्थी,राजनीति से प्रेरित दिखाया है ।

ऊपर के उध्दरणों से स्पष्ट पता चलता है कि नरेंन्द्र मोहन ने अपने नाटकों में जहाँ भी नारी का विषय लिया उसे युगानुकूल परिस्थितियों में ढालने की कोशिश की है । इनके नाटकों के नारी पात्रों को तीन वर्गो में विभाजित किया जा सकता है प्रथम ये जो समाज, परिवार के व्दारा उत्पीडित,उपेक्षित,शोषक की यातना को सहन करती है-नीमा,रुपा,परमिन्दर, शालू, सूरजीत सन्तों आदि दूसरा वर्ग वो जो अपने परिवार के प्रतिपूर्ण समर्पित,उत्तरदायित्वपूण्र नारी का चरित्र है जैसे न्लोई,जिजाई,कनकाई,तीसरा वर्ग यो समाज व्दारा गलत रास्ते पर डाल दिया गया है। रमजनिया, मंगला, शबनम, ये नारी पात्र-कबीर, तुकाराम का साथ पाकर एक उच्चकोटि की आध्यात्मिक महिला बनती है । इस तरह देखने से स्पष्ट होता है कि नरेन्द्र मोहन ने जहाँ तक हो सका है नारी के चरित्र की विविधता को दिखाते हुए नारी की स्थिति को शोचनीय बताया है आज भी वह रुढिवादी समाज की परम्पराओं,रीतिरिवाजें को वहन कर रही है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. नरेन्द्र मोहनः सृजन और संवाद-सं.डॉ.वीरेन्द्र सिंह,अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली-110030 प्र. संस्करण
2. नाटकीय शब्द और नरेन्द्र मोहन-डॉ.गुरुचरण सिंह,सार्थिक प्रकाशन 100 ए. , गौतम नगर,नई दिल्ली ।
3. नरेन्द्र मोहन रचनावली-खण्ड चार,सम्पादक-गुरुचरण सिंह और सुमन पंडित,संजय प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2006 , 4 अंसारी रोड, दरियागंज-नयी दिल्ली -2

सुनीता

पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.